B.A.L.L.B 4th SEM Political Science in LAW

→ Aristotle's Revolutionary Idea-

The most prominent feature of the life of the Greek city states was their political instability. Aristotle himself saw the consequences of this political instability. Therefore, he decided to think of ways to overcome this instability, which he has given the name of Kranti. In the seventh book polyticksathi, he has highlighted the reasons for change in the state revolution and the constitution, and in this book he has given the measures on the basis of which the revolution can be countered. Aristotle deliberated its cause and remedies for retribution. Based on historical study and ~~supervision~~ supervision. After studying the constitutions of 158 countries, he presented a discussion on the basis of matured political pedagogy.

→ The meaning of revolution:→

The word revolution has not been used by Aristotle in the sense of French revolution or communist revolution, but according to him, every change in state, constitution or government is a revolution? According to Aristotle, the main forms of front can be as follow:→

Scanned with Cam

1.) To establish a system of governance in place of any previously established system such as- Danikatanna in place of democracy or to establish a democracy in place of wealth.

2.) If the revolution is changed in any other way, then the bloodless revolution is changed. It is called and when the rule is changed by bloodshed then it is called Raktim revolution.

3.) When a leader or speaker revolutionizes his speech in a state, then this revolution comes under ideological revolution.

4.) When some ~~parts~~ important parts of the constitution. If a change is made only then this partial ~~rwo~~ revolution and the whole constitution are changed, it is called a complete revolution.

5.) When a particular person programing is called Wyaktigt revolution should be changed and replaced if there is a change in the ruling without changing the constitution called Awyattigt revolution.

6.) If there is a change in the person governing keeping the nature of the system unchanged, then it is also a form of revolution. The special thing is that the changes in the ruling class of a country, even if the basic form of governance is unaffected by those changes, aristotle calls them revolution.

Scanned with Cam

B.A. LL.B 4th SEM Political Science in LAW

TOPIC

→ अरस्तू का क्रान्ति सम्बन्धी विचार

- यूनानी नगर राज्यों के जीवन की सबसे प्रमुख विशेषता उनकी राजनीतिक अस्थिरता थी। अरस्तू ने स्वयं इस राजनीतिक अस्थिरता के दुष्परिणाम देखे थे। अतः उसने इस अस्थिरता, जिसे उसने क्रान्ति का नाम दिया है, को दूर करने के उपाय सुझाने का निश्चय किया। पॉलिटिक्स की सातवीं पुस्तक में उसने राज्य क्रान्ति और संविधान मे परिवर्तन लाने वाले कारणों पर प्रकाश डाला है और इसरी पुस्तक में उसने उन उपायों का सुझाव दिया है जिनके आधार पर क्रान्ति का प्रतिकार किया जा सकता है। अरस्तू ने क्रान्ति, उसके कारणो और प्रतिकार के उपायों का विवेचन ऐतिहासिक अध्ययन और पर्यवेक्षण के आधार पर किया है। उसने 158 देशो के संविधानों का अध्ययन करने के बाद परिपक्व राजनीतिक बुद्धिमत्ता के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया।

→ क्रान्ति का अभिप्राय -

अरस्तू के द्वारा क्रान्ति शब्द का प्रयोग फ्रेंच क्रान्ति या साम्यवादी क्रान्ति के अर्थ में नही किया गया है, वरन उनके अनुसार राज्य, संविधान या शासन सत्ता मे होने वाला प्रत्येक परिवर्तन क्रान्ति है। अरस्तू के अनुसार क्रान्ति के प्रमुख रूप निम्न प्रकार हो सकते है।

1) पहले से स्थापित किसी शासन व्यवस्था के स्थान पर दूसरी शासन व्यवस्था स्थापित करना जैसे - जनतन्त्र के स्थान पर धनिकतन्त्र या धनिकतन्त्र के स्थान पर जनतन्त्र स्थापित करना।

Scanned with Cam

2) अनेक और क्रान्ति किसी रक्तपात के शासन को बदल दिया जाता है तो वह क्रान्ति रक्तहीन क्रान्ति कहलाती है तथा जब रक्तपात के द्वारा शासन परिवर्तित होता है तो वह रक्तिम क्रान्ति कहलाती है।

3) जब किसी राज्य मे नेता या वक्ता अपने भाषण से क्रान्ति ला दे तो यह क्रान्ति वैचारिक क्रान्ति के अन्तर्गत आती है।

4) जब संविधान के कुछ महत्वपूर्ण भागो मे ही परिवर्तन किया जाता है तो यह आंशिक क्रान्ति तथा सम्पूर्ण संविधान ही बदल दिये जाने पर यह पूर्ण क्रान्ति कहलाती है।

5) जब किसी व्यक्ति विशेष को हटाकर परिवर्तन किया जाये तो व्यक्तिगत क्रान्ति कहलाती है और यदि बिना शासक को बदले संविधान में परिवर्तन हो जाए तो उसे अव्यक्तिगत क्रांति कहते है।

6) यदि शासन व्यवस्था के स्वरूप को अपरिवर्तित रखते हुए शासन करने वाले व्यक्तियों में कोई परिवर्तन होता है, तो वह भी क्रान्ति का एक रूप ही है। विशेष बात यह है। कि एक देश के शासक वर्ग में जो परिवर्तन होते है, चाहे उन परिवर्तनों से शासन व्यवस्था का मूल रूप अप्रभावित रहे, अरस्तू उन्हे क्रान्ति की संज्ञा देता है।

Scanned with Cam